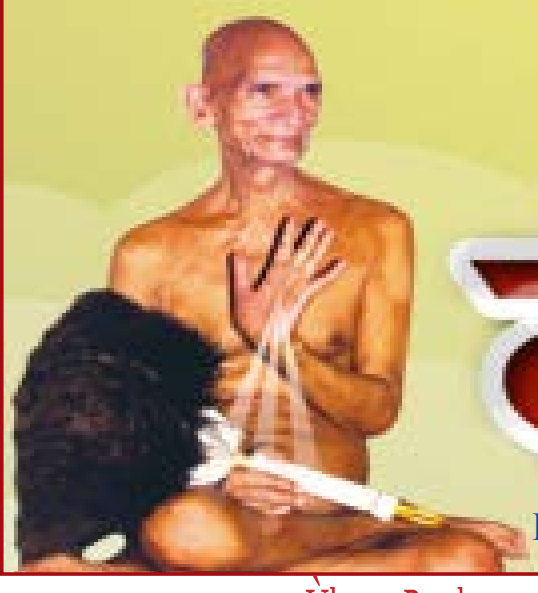

जैनाचार

Issue: 144
30 August 2020

www.jainachar.com Daily

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

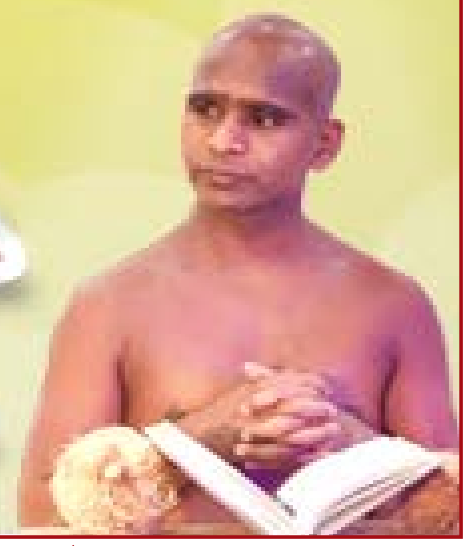

mÙke R;kx dák tx lkjk

–डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर, 9826091247

धर्म त्याग रूप ही होता है। त्याग के बिना कोई भी धर्म जीवित नहीं रह सकता। त्याग धर्म दान से प्रगट होता है। त्यजतीति त्यागः– जो त्याग किया जाय, छोड़ा जाय वह त्याग है। और ददातीति दानं– जो दिया जाय वह दान है। त्याग करने के लिए हमारे पास वस्तु होना आवश्यक नहीं हैं। हम पापों का त्याग कर सकते हैं, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील आदि का त्याग कर सकते हैं। किन्तु दान के लिए अपने पास कुछ होना चाहिए। ग्रहस्थ के मुख्य रूप से दो कर्तव्य कहे गये हैं। जैन धर्म ग्रन्थों में कहा है–'श्रावक धर्म में दान–पूजा धर्म आवश्यक कर्तव्य है। जो अवश्य ही करने योग्य होता है उसका नाम आवश्यक है। दान करना, पूजा करना श्रावक का मुख्य कर्तव्य है। सच्चा घर्मी श्रावक इनका पालन नितप्रति करता है। अपने और दूसरे के उपकार के लिए जो वस्तु दी जाती है वह दान है। दान चार प्रकार के कहे गये हैं– औषधि दान, शास्त्रदान (ज्ञान दान), अभयदान और आहारदान। ये चार प्रकार के दान श्रावक के लिये मुख्यता से बताये गये हैं।

औषधिदान में बड़े अस्पताल खुलवा देने वाले लोग तो हैं ही सो ठीक है लेकिन सामान्य लोग भी दानी हो सकते हैं। कुछ ऐसे सामान्य लोग हो सकते हैं, जिनको तरह तरह की औषधि का ज्ञान हो सकता है। निस्वार्थ भाव से वे वही किसी को बता दें। किसी के ऊपर प्रयोग करके उसको स्वस्थ कर दिया तो उसका भी औषधिदान हो गया। रोगी तपस्वियों को औषधि की व्यवस्था करना उत्तम औषधिदान है। कृष्ण द्वारा बीमार दिगम्बर साधु को ठीक करने हेतु पूरे नगर में औषधि युक्त लड्डू आहार में देने के निवेदन के साथ वितरित करने का कथानक दिया ग्रन्थों में आया है। एक मुनिराज रोगी हो गये। मुनिराज एक ही घर में पूर्व निश्चित करके आहार नहीं लेते हैं। वे तो प्रतिज्ञा लेकर उठते है और जो भक्ति भाजन युक्त विनय संपन्न और मन–वचन–काय की शुद्धि उच्चारण करते हुए अनुनय करता है उसके यहां विधिपूर्वक आहार लेने चले जाते हैं। वे नगर में किसी भी ग्रहस्थ के यहां आहार को जा सकते हैं। इस कारण श्रीकृष्णजी ने औषधियुक्त लड्डू बनवाकर नगर के सभी श्रावकों के घरों में पहुंचवा दिये, अब वे जिस घर में भी जाते उन्हें आहार में औषधियुक्त लड्डू भी दिये जाते। श्री कृष्ण ने ऐसा एक सप्ताह किया और उन मुनिराज का रोग ठीक हो गया। ये है उत्कृष्ट औषधिदान। इस दान के फल स्वरूप श्रीकृष्ण को मुक्ति का बंध हुआ। आगे का कथानक और भी है किन्तु यहां अति विस्तार नहीं करना है।

दूसरा शास्त्रदान ज्ञानदान कहा गया है। अध्ययन अध्यापन हेतु शास्त्रदान देना, ज्ञानार्जन के साधन पुस्तकें आदि देना, निश्वार्थ अध्यापन आदि करना ज्ञानदान है। ज्ञानदान के फल का एक दृष्टान्त आता है कि जंगल में आगलगी थी, वस एक पेड़ था जिसमें आग नहीं लगी थी। एक ग्वाले ने जाकर देखा कि उस पेड़ के कोटर में एक शास्त्र रखा है, उस ग्वाले ने वह शास्त्र जलने से बचा लिया और वह एक मुनिराज को दान में दे दिया। जिन मुनिराज को शास्त्रदान दिया गया उनका तो आगे का उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु जिस ग्वाले ने शास्त्रदान दिया था वह उस दान के प्रभाव से आगे चलकर महान आचार्य कुन्दकुन्द हुआ। जिन्होंने 84 प्राकृत ग्रन्थ लिखे।

अभयदान वह है जिसमें दूसरे जीव को भयमुक्त किया जाय, उसके प्राणों की रक्षा की जाय। इस दान के उदाहरण में जयपुर राज्य के दीवान अमरचन्द की द्रवित करने वाली घटना उल्लेख प्रमुखता से प्राप्त होता है, जिनके कहने मात्र से जंगल के भागते हुए हिरण रुक जाते हैं, उन्हें परीक्षा स्वरूप जब वाध्य किया जाता है तो वे सिंह से निवेदन करते हैं कि तू मुझे खा ले या जलेबी खा। सिंह उन्हें छोड़ कर जलेबी खा लेता है। धर्मशालाएं बनवाना आदि भी इस दान के अन्तर्गत आते हैं। पशुओं आदि को कतल होने से बचाना अभयदान है।

चतुर्थ आहरदान। उत्कृष्ट पात्र को भोजन कराना श्रेष्ठ आहार दान कहा गया है। राजा वज्रजंघ और रानी श्रीमती ने जंगल में युगल मुनिराजों को आहारदान दिया जिसके फलस्वरूप वे भगवान आदिनाथ और राजा श्रेयांस बने। राजा श्रेणिक वही हैं जिन्हें भगवान आदिनाथ के छह माह भ्रमण करने के उपरान्त पहलीवार गन्ने का आहारदान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बाह्य में धन, सम्पत्ति आदि का दान तथा अंतरंग से राग–द्वेष मो का त्याग ही त्याग धर्म है। त्याग परपदार्थों का किया जाता है, त्याग के बिना सुख की प्राप्ति संभव नहीं। जो जीव सारे पर पदार्थों के मोह को छोड़कर देह और भोगों से उदासीन परिणाम रखता है उसके त्यागधर्म होता है। आवश्यक संचय में से दान करना त्याग धर्म है। संग्रह की प्रवृत्ति को पाप व दान की प्रवृत्ति को पुण्य कहा गया है। पुण्य से ही सुख की प्राप्ति होती है। त्याग की वृत्ति ही मोक्ष का साधन है।

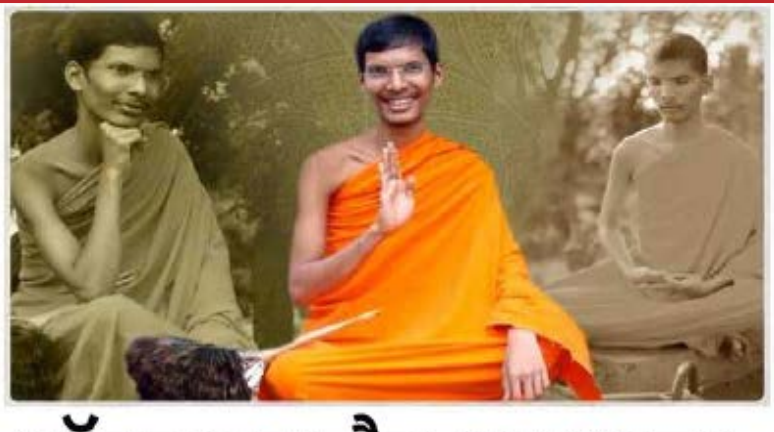

ऑनलाइन जैन पाठशाला

स्वस्तिकश्री जिनसेन महास्वामी भट्टारकजी

प्रतिदिन

दोपहर- 1:00 बजे

प्रज्ञाश्रमण जूम चैनल पर

Zoom ID 701 701 1008

Password 1008

उत्तम त्याग धर्म-आठवां दिन

जीवन में अर्जन के साथ विसर्जन भी आवश्यक है। जीवन मे यदि जोड़ते ही रहे और कुछ छोड़ा नहीं तो डूब जाओगे। सिकन्दर से भी ज्यादा जोड़ो लेकिन जब छोड़ने का समय आए तो महावीर की तरह ऐसा छोड़ो कि तन पर एक धागा भी न रहे। समय आने पर छोड़ने का भी साहस रखो। जोड़ने के साथ छोड़ने की कला भी आनी चाहिए। त्याग ओर दान की महिमा निराली है। इस किनारे से उस किनारे पहूंचने के लिए तट का मोह त्यागने का मनोविज्ञान उसी की समझ में आता है जिसने त्याग को जीवन में अपनाया है। एक तट का मोह त्यागे बिना दूसरे तट तक पहुँचना सम्भव नहीं है। महापुरुषों के कथनानुसार त्यक्तेन भुंजीता : का सिद्धांत त्याग और दान की महिमा को बखानता है। भोग के समय भी त्याग का भाव रखो। आसक्त भाव से नहीं अनासक्त भाव से भोग करने पर ही उपभोग सार्थक होता है।

आलू, प्याज, गाजर, मूली जमीन के अन्दर अपने फल छिपाए रखते है, इसलिए उन्हें जड़ से उखाड़ा जाता है, इसके विपरीत आम, अमरूद, अनार आदि ऐसे पेड़ है जो अपने पर लगने वाले फल लगातार दूसरों को देते रहते हैं। इसलिए उन्हें कभी उखाड़ा नहीं जाता। एक बार फल दे दिए, अगली बात उन्हीं पर दुगुनी संख्या में आ जाते हैं। यही तो दान की महिमा है। गाय भी अपना दूध औरों को पिलाने के लिए बेचेन रहती है। संचय वृत्ति और परिग्रह पाप है। जोड़ कर रख लो चाहे लाख हीरे-मोती, मगर याद रखना कफन में जेब नहीं होती।

गणिनी आर्यिका १०५ श्री ज्ञानमति माताजी एवं आर्यिका रत्न १०५ श्री चंदनामति माताजी ने लक्ष फाउंडेशन को भरपुर आर्शीवाद दिया

भारतगौरव गणिनी प्रमुखा श्री ज्ञानमति माताजी ने दशलक्षण पर्व के दोरान लक्ष फाउंडेशन एनजीओ को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जिस मकसद से इस संस्था की स्थापना की गयी है, संस्था अपने लक्ष्य को हासिल करे ओर जनहित के कार्यो में सदैव अग्रणी रहे।

गत २२ अगस्त शनिवार को झूम एप के माध्यम से लक्ष फाउंडेशन ट्रस्ट ने गणिनी आर्यिका १०५ श्री ज्ञानमति माताजी एवं आर्यिका रत्न १०५ श्री चंदनामति माताजी और भट्टारक स्वामीजी के आशीर्वाद प्रवचन का आयोजन किया, जिसमें इस ओनलाईन आयोजन का संचालन करते हुए लक्ष फाउंडेशन कमिटी की अध्यक्षा पूनम विनायका ने कहा, यह सौभाग्य की बात है कि दश लक्षण पर्व में हमारी टीम को माताजी का अअशीष मिला। इससे हमें उर्जा मिलेगी और हम लोग नारी शक्ति के लिये बहेतर कार्य कर सकेंगे।